इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

अक्षय वट साधना

वट सावित्री पर्व - 16 अप्रैल

अक्षय वट साधना का **मूल तत्व पूर्ण कुटुम्ब सुख प्राप्ति** है। इस **साधना** के माध्यम से **स्त्रियाँ** अपने **गृहस्त जीवन** को **सुख-शांति** युक्त निर्मित करने में **सफल** होती हैं साथ ही उनका जो भी **मनोरथ** होता है, उसकी **पूर्णता का मार्ग** प्रशस्त होता है। **परिवार** में **श्रेष्ठ प्रेममय** वातावरण निर्मित होता है। इस **साधना** के माध्यम से **पुत्र प्राप्ति** या उसके **उन्नति-प्रगति,** की कामना भी सिद्ध होती है। साथ ही **शिव गौरी सौन्दर्य सम्मोहन सौभाग्य शक्ति** की प्राप्ति होती है। इस **साधना** को प्रत्येक **स्त्री** व **बालिका** को अपने **गृहस्थ जीवन** को **अत्यधिक मधुर, आत्मीय, सामंजस्य पूर्ण** बनाने हेतु करना ही चाहिये क्योंकि **गृहस्थ सुख** से ही जीवन **आनन्दमय** बनता है।

सर्व असुर विनाशिनी आद्या शक्ति कालरात्रि साधना

सीता नवमी - 25 अप्रैल

मानव जीवन में जिस **श्री** की अत्यधिक आवश्यकता होती है, जिस पर **संपूर्ण संसार** का **आश्रय** निर्भर है, उन्हीं **जगत्माया कमला** का अवतरण **'माता सीता'** के रुप में हुआ जो **इच्छा-क्रिया शक्ति** की **अधिष्ठात्री** हैं व **कालरात्रि का स्वरुप** हैं। **25 अप्रैल सीता नवमी** का **दिव्य दिवस** उन्हीं **जगत् माता** के **आविर्भाव** स्वरुप **असुरमय स्थितियों** के **शमन का अवसर** है, जीवन में **व्याप्त** सैकड़ों रावण रुपी **असुरों** का **संहार** मुहुर्त है। इस विशेष दिवस में **भगवती सीता** का **कालरात्रि स्वरुप** में **साधना, पूजा, आराधना,** दीक्षा सम्पन्न करने से साधक **महावीर हनुमान** जैसे **बल, बुद्धि, ओज, तेज से आपूरित** हो सकते हैं।

माया मोहिनी दीक्षा

मोहिनी एकादशी - 27 अप्रैल

मनुष्य की यही **प्रकृति** रही है कि उसने अपने **व्यवहारिक नीतियों** के साथ-साथ जीवन के प्रत्येक **क्षेत्रों** में ऐसे **उपाय** प्राप्त करने चाहे जिससे **अल्प काल** में ही जीवन के सभी **सुखों** का, समस्त प्रकार के **वैभव** का **भोग** व उससे से भी अधिक अपने आप को **आकर्षणमय** बनाने की तथा **सम्मोहन** करने की **क्रिया** देह में स्थापित की जा सके। केवल **जिम** या **ताकत** के टैबलेट से जीवन को **निरोगमय, दीर्घायुमय** और **कृष्ण के समान मोहिनी आकर्षण** युक्त नहीं बनाया जा सकता है। उक्त **स्थितियों** को दो प्रकार से ही प्राप्त किया जा सकता है- पहला **साधना** के द्वारा और दूसरा **दीक्षा** के द्वारा। प्रत्येक **साधक** को **मोहिनी एकादशी पर्व** पर **'माया मोहिनी दीक्षा'** के माध्यम से अपने जीवन को **अवश्य** सँवारना चाहिए।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।